

पर्व प्रथम

अंक चौथा

श्री जैन सत्य- प्रकाश.

तंत्री
श्रीमनदास गोकणदास

प्रकाशक
श्री जैनधर्म
सत्यप्रकाशक समिति
C/o पांजरपोण
अमदावाद.
(गुजरात)

भगवान् महावीर !!!

निगन्ठ जिनिजिनि जलेर व्यवहार संबन्धे अत्यंत संयमी ओ सावधानी तिनि अन्याय ओ अधर्म हईते निजिके सयमे राखेन. सकल अधर्म, अन्याय तिनि धूर्इया मूछिया फेलिया छेन एवं सकल पाप ओ अधर्मके दूरीभूत करिया छेन ।

निर्गन्थ ज्ञातपुत्र प्रत्येक जल-व्यवहारना प्रसंगे अलु संयमी अने सावधान हता. तेओ अन्याय तथा अधर्मथी पे ताने रोकी राखता हता. तेओ दरेक अधर्म अन्यायने घोर नाश्या हतो तेमज समस्त पाप तथा अधर्मने हर कर्या हता.

(ज्यौञ्ज शास्त्र-गुभंगलविलासिनी टीका)

३० श्री विमलाचरणलाड
M-A, B-L, PH-D.

भंगलाचरण प्राचीन
दिगम्बरानी उत्पत्ति आ० सागरानंद
सूरीश्वरज
समीक्षाअभाविष्करज उ० लावण्यविजयज
महाराज
संतभास विचारणा आ० श्री विजयलक्ष्मि
सुरिज
दिगम्बर शास्त्र कैसे बनें मुनि दर्शनविजय
मथुरा इण्डिया मुनि न्यायविजय
तेरमा सैकानी अंक जिन-
मूर्तिना पभासन उपरतो
लेख साराभास नवाय